झूठा समूह (कल्ट)
फ्रेंक्लिन द्वारा तैयार शिक्षण सामग्री

I. परिचय

- A. पवित्रशास्त्र में दी गई चेतावनियाँ
- B. परिभाषाएँ

II. यहोवा के साक्षी (जेहोवास विटनेस)

- A. पृष्ठभूमि
- B. गैर-बाइबलीय शिक्षाओं का सार

III. मोरमोनिज्म

- A. पृष्ठभूमि
- B. गैर-बाइबलीय शिक्षाओं का सार

IV. यूनिफिकेशन चर्च

- A. पृष्ठभूमि
- B. गैर-बाइबलीय शिक्षाओं का सार

V. न्यू ऐज मूवमेंट्स

- A. पृष्ठभूमि
- B. गैर-बाइबलीय शिक्षाओं का सार

VI. "केवल यीशु" कलीसियाएं ("जीसस ओनली" चर्चेस)

- A. पृष्ठभूमि
- B. गैर-बाइबलीय शिक्षाओं का सार

VII. सेवंथ डे एडवेंटिस्टस

- A. पृष्ठभूमि
- B. गैर-बाइबलीय शिक्षाओं का सार

VIII. माइंड साइंसेज

- A. पृष्ठभूमि
- B. गैर-बाइबलीय शिक्षाओं का सार

IX. पुस्तक विवरणिका

झूठा समूह (कल्ट)
फ्रेंक्लिन द्वारा तैयार शिक्षण सामग्री

I. परिचय

A. पवित्रशास्त्र में दी गई चेतावनियाँ

1. मत्ती 24:4-5 यीशु ने उन को उत्तर दिया, सावधान रहो! कोई तुम्हें न भरमाने पाए। क्योंकि बहुत से ऐसे होंगे जो मेरे नाम से आकर कहेंगे, कि मैं मसीह हूं: और बहुतों को भरमाएंगे।

2. मत्ती 24:11 और बहुत से झूठे भविष्यद्वक्ता उठ खड़े होंगे, और बहुतों को भरमाएंगे।

3. मत्ती 24:24 क्योंकि झूठे मसीह और झूठे भविष्यद्वक्ता उठ खड़े होंगे, और बड़े चिन्ह और अद्भुत काम दिखाएंगे, कि यदि हो सके तो चुने हुओं को भी भरमा दें।

4. 1 यूहन्ना 2:18-19 हे लड़कों, यह अन्तिम समय है, और जैसा तुम ने सुना है, कि मसीह का विरोधी आने वाला है, उसके अनुसार अब भी बहुत से मसीह के विरोधी उठे हैं; इस से हम जानते हैं, कि यह अन्तिम समय है। वे निकले तो हम ही में से, पर हम में के थे नहीं; क्योंकि यदि हम में के होते, तो हमारे साथ रहते, पर निकल इसलिये गए कि यह प्रगट हो कि वे सब हम में के नहीं हैं।

5. गलातियों 1:6-9 मुझे आश्चर्य होता है, कि जिस ने तुम्हें मसीह के अनुग्रह से बुलाया उस से तुम इतनी जल्दी फिर कर और ही प्रकार के सुसमाचार की ओर झुकने लगे। परन्तु वह दूसरा सुसमाचार है ही नहीं: पर बात यह है, कि कितने ऐसे हैं, जो तुम्हें घबरा देते, और मसीह के सुसमाचार को बिगाड़ना चाहते हैं। परन्तु यदि हम या स्वर्ग से कोई दूत भी उस सुसमाचार को छोड़ जो हम ने तुम को सुनाया है, कोई और सुसमाचार तुम्हें सुनाए, तो श्रापित हो। जैसा हम पहिले कह चुके हैं, वैसा ही मैं अब फिर कहता हूं, कि उस सुसमाचार को छोड़ जिसे तुम ने ग्रहण किया है, यदि कोई और सुसमाचार सुनाता है, तो श्रापित हो। अब मैं क्या मनुष्यों को मनाता हूं या परमेश्वर को? क्या मैं मनुष्यों को प्रसन्न करना चाहता हूं?

B. परिभाषाएँ

1. मसीहियत का एक **झूठा समूह या कल्ट** लोगों का एक ऐसा समूह है जो मसीही होने का दावा करता है और किसी अगुवे, अगुवों के समूह या संस्था के द्वारा सिखाई जाने वाली ऐसी धर्मविज्ञानी शिक्षाओं का अनुसरण करता है जो बाइबल में सिखाई गई मसीही विश्वास की मुख्य शिक्षाओं का इनकार करती हैं।

2. **झूठा समूह या कल्ट-** ऐसा धार्मिक समूह जिनमें ये विशेषताएँ पाई जाती हैं :
   a) ऐसा अगुवा जो दावा करता है कि वह परमेश्वर द्वारा बुलाया गया है और ऐसा संदेश देता है बाइबल में नहीं पाया जाता।
   b) वह संदेश प्रायः इस रूप में प्रस्तुत किया जाता है जिसे वह प्रेरणा-प्राप्त लेखन कहता है और वह सामान्यतः प्रकाशन से संबंधित होता है। ये शिक्षाएं और/या क्रियाएँ पवित्रशास्त्र की शिक्षाओं के विपरीत होती हैं।
   c) उसकी अगुवाई अधिकारवादी होती है और इसके द्वारा वह कट्टर जीवन-शैली की मांग करता है।
   c) यह समूह दावा करता है कि केवल उनका मार्ग ही सही मार्ग है।
   d) वे अपेक्षा करते हैं कि बाकी सब से उन्हें सताया जाएगा।

3. **मत (सेक्ट)** – ऐसा समूह जो और अधिक कड़ाई, समर्पण या कार्य करने के तरीके के आधार पर स्वीकृत समूह से अलग हो जाता है। सामान्यतः उनका मुख्य सिद्धांत कट्टरवादी विश्वास का ही एक पहलू होता है जो खोता जा रहा है एवं जिस पर अब ध्यान नहीं दिया जाता है और ऐसा माना जाता है कि उनका सही तरीके से पालन नहीं हो रहा है। उदाहरण के तौर पर, क्वेकर्स, मेनोनाइट्स, साल्वेशन आर्मी, प्लाईमाउथ ब्रदर्न और पेंटेकोस्टल्स। इन सबको अब सम्प्रदायों के मान्य वर्गीकरण में गिना जाने लगा है।

4. **सम्प्रदाय (डिनोमिनेशन)-** ऐसा समूह जिसने संस्थागत मसीहियत की एक शाखा से स्वयं को अलग कर लिया हो और समय के साथ-साथ अपने आप को प्रतिष्ठित एवं विश्वसनीय रूप में स्थापित कर लिया।

5. **रूढ़िवादी आन्दोलन (ए फंडामेंटलिस्ट फ्रिंज मूवमेंट)-** शिक्षा के रूप में वे पूरे कट्टरवादी होते हैं, पवित्रशास्त्र के अधिकार, त्रिएकता, मसीह की दिव्यता, और ऐतिहासिक मसीहियत के आधारभूत नियमों पर विश्वास करते हैं। कार्य-प्रणाली और व्यावहारिक रूप में वे सामान्यतः अधिकारवादी होते हैं और तानाशाही अगुवों द्वारा चलाए जाते हैं जो अपने अनुयायियों के व्यक्तिगत जीवनों पर कड़ा नियंत्रण रखते हैं।

II. यहोवा के साक्षी (जेहोवास विटनेस)

A. पृष्ठभूमि

द वाचटावर बाइबल और ट्रैक्ट सोसायटी, लोकप्रिय रूप से यहोवा के साक्षी या जेहोवास विटनेस, की स्थापना 1880 में ऐलेघेनी, पेन्सिल्वेनिया के चार्ल्स टेज रस्सेल द्वारा हुई। बचपन से

रस्सेल प्रेसबिटेरियन और कोंग्रिगेशनल कलीसियाओं में जाया करता था और नरक के विषय में उनकी शिक्षा उसे बिलकुल स्वीकार नहीं थी। सेवंथ डे एडवेंटिस्टस के प्रभाव में रस्सेल ने उनकी शिक्षा को ग्रहण कर लिया कि "नरक" कब्र को ही कहा गया है और कि अंत में दुष्ट व्यक्ति को अनंतकाल के लिए प्रताड़ित नहीं किया जाएगा बल्कि उसे समाप्त कर दिया जाएगा। एडवेंटिस्ट के प्रभाव में रस्सेल ने इस विचार को भी ग्रहण कर लिया कि मसीह का द्वितीय आगमन एक अदृश्य, आत्मिक "उपस्थिति" है जो पहले से आरंभ हो चुकी है, न कि भविष्य में होने वाला भौतिक या देहिक आगमन। रस्सेल ने त्रिएकता और मसीह के परमेश्वर होने की शिक्षाओं को भी नकार दिया। रस्सेल की यह मानते हुए 1916 में मृत्यु हो गई कि प्रथम विश्व युद्ध हर-मगिदोन था।

जोसफ रुदरफोर्ड (मृत्यु 1942), सोसायटी का कानूनी सलाहकार, रस्सेल के बाद इस आन्दोलन का मुखिया बन गया और उसके कार्यकाल में उन्होंने यशायाह 43:12 से "यहोवा के साक्षी" नाम को ग्रहण किया। आज पूरे विश्व में लगभग 50 लाख सक्रिय यहोवा के साक्षी पाए जाते हैं। उन्हें लोगों का धर्म परिवर्तन करने के बड़े प्रयास करने वालों के रूप में जाना जाता है, जो हर साल लगभग 100 करोड़ घंटे साक्षी देने में लगाते हैं। इसका अर्थ है एक सदस्य एक साल में 200 से अधिक घंटे देता है। यहोवा के साक्षी किसी अन्य समूह से अधिक साहित्य भी बांटते हैं।

B. गैर-बाइबलीय शिक्षा का सार

1. **बाइबल के अधिकार** के स्थान पर उनके अगुवों की व्याख्या को सम्पूर्ण अधिकार के रूप में माना जाता है। रस्सेल और रुदरफोर्ड के लेखनों को बाइबल से अधिक महत्व दिया जाता है। वे अपने न्यू वर्ल्ड अनुवाद का ही प्रयोग करते हैं जिसमें बाइबल मुख्य अनुच्छेदों के अनेक शब्दों में बदलाव कर दिया गया है।

   उत्तर: लूका 4:4 & 8 में स्वयं यीशु मसीह के द्वारा पवित्रशास्त्र के अधिकार को पहचाना गया है। यह भी देखें : 2 तीमुथियुस 3:16 और 2 पतरस 3:15-16।

2. **त्रिएकता** को यह कहकर ठुकरा दिया गया है कि यह बाइबल के अनुसार नहीं है और यह गैर-मसीहियों के प्रभाव के कारण है।

   उत्तर : मूलभूत धर्मशिक्षा के स्तर 1 के नोट्स में त्रिएकता को देखें।

3. उनका यह गलत विचार है कि बुरे शास्त्रियों ने बाइबल से **परमेश्वर के नाम** को हटा दिया था। उन्होंने बाइबल के अपने न्यू वर्ल्ड ट्रांसलेशन में इस नाम को रखा है।

   उत्तर- ईश्वर का सबसे जाना-पहचाना नाम "परमेश्वर" है जो मूल भाषा के एलोहीम का

अनुवाद है (यह उत्पत्ति 1:1 और अन्य कई स्थानों पर पाया जाता है) एलोहीम बहुवचन है जो त्रिएकता को दर्शाता है। एक और नाम है जो परमेश्वर के विशेष व्यक्तिगत नाम के रूप में दिया गया है, वह है YHWH (निर्गमन 3:14, यशायाह 42:8 और अन्य स्थानों पर)। इसे पवित्र शास्त्र से हटाया नहीं गया है। यहूदी लोग परमेश्वर के नाम से जुडी पवित्रता को सम्मान देने के कारण इसका उच्चारण नहीं करते और न ही करेंगे। इसलिए इसे निरंतर "प्रभु" के रूप में अनूदित किया जाता है। इसका सही उच्चारण ज्ञात नहीं है इसलिए यहोवा के रूप में उच्चारित किया जाता है। YHWH इब्रानी क्रिया से आता है जिसका अर्थ है, होना या बनना।

4. वे **यीशु मसीह** के परमेश्वरत्व का इनकार करते हैं और सिखाते हैं कि वह प्रधान स्वर्गदूत मीकाएल था और वह सृजा गया पहला प्राणी था। यहोवा परमेश्वर के सृजे जाने के बाद यीशु सब वस्तुओं की सृष्टि करने में यहोवा का दूत था। हालाँकि उसकी प्रकृति परमेश्वर की नहीं है फिर भी वह "सामर्थी" है और इसलिए उसे "देवता" कहा जा सकता है। उन्होंने यूहन्ना 1:1 का अनुवाद भी बदल दिया : बहुत पहले, जब परमेश्वर ने किसी भी चीज़ की सृष्टि नहीं की थी, तब वचन परमेश्वर के साथ था और वचन ईश्वरीय था।

   उत्तर : यूहन्ना 12:39-41 में कहा गया है कि यीशु वही था जिसे यशायाह ने मन्दिर में देखा और यशायाह 6:5 कहता है कि यह यहोवा था। प्रकशितवाक्य 1:17 में यीशु ने स्वयं को "आदि और अंत" कहा जो कि यशायाह 44:6 का यहोवा का शीर्षक है (देखें 1 पतरस 2:8 और यशायाह 8:13-14; प्रकशितवाक्य 2;23 और यिर्मयाह 17:8-10)

5. वे यीशु के देहिक पुनरुत्थान का इनकार करते हैं, और कहते हैं कि उसका पुनरुत्थान एक अदृश्य आत्मा के रूप में हुआ और वह फिर से स्वर्गदूत बन गया।

   उत्तर : लूका 24:39-43 यूहन्ना 20:17, 27

6. **पवित्र आत्मा** व्यक्तित्व नहीं है और न ही परमेश्वरत्व का भाग है, वह तो यहोवा की सक्रिय शक्ति है जो उससे उसकी इच्छा पूरी करने के लिए निकलती है। **उत्तर** : प्रेरितों के काम 5:3-4

7. वे यह नहीं मानते कि मनुष्यों में **आत्मा** होती है जो शरीर की मृत्यु के बाद भी अनश्वर रहती है। वे सिखाते हैं कि मृत्यु के समय हमारा अस्तित्व समाप्त हो जाता है, परन्तु पुनरुत्थान के समय यहोवा उन्हें अपनी याददाश्त से पुनः जन्म देगा।

   उत्तर : 2 कुरिन्थियों 5:3-4

8. वे सिखाते हैं कि मसीहियों के भिन्न-भिन्न **वर्ग** हैं और उनकी नियति भी भिन्न-भिन्न हैं। प्रकाशितवाक्य 7 और 14 के 1,44,000 लोग वे हैं जो यीशु मसीह के साथ आत्माओं के रूप में "पुनः जन्मे" हैं; वे स्वर्ग में मसीह के साथ राज्य करेंगे। अन्य लोग परलोक में पुनरुत्थानित शरीरों के साथ रहेंगे। **उत्तर :** गैर-बाइबलीय बकवास

9. वे सिखाते हैं कि पारम्परिक समझ में कोई **नरक** नहीं है। जो वहां भेजे जाते हैं उन्हें मिटा दिया जाएगा, वे अनंतता तक कष्ट या दुःख नहीं सहेंगे। **उत्तर :** 2 थिस्स्लुनिकियों 1:8-9

10. **यीशु मसीह की मृत्यु** आदम में पाए जाने वाले हमारे दोष की क्षमा के लिए प्रायश्चित की छुड़ोती थी। वह अदृश्य आत्मा के रूप में जिलाया गया, जिसमें उसने देहिक और पृथ्वी पर के अपने जीवन के अधिकार को त्याग दिया। उत्तर : यूहन्ना 20:17, 27; प्रेरितों के काम 1:9-11

11. **उद्धार** मसीह में विश्वास करने और कामों के द्वारा मिलता है, जैसे कि उनकी शिक्षा से आत्मिक ज्ञान को प्राप्त करना, और घर-घर जाकर परमेश्वर के राज्य का काम करना, उनके द्वारा बपतिस्मा पाना और नैतिक जीवन जीना। उत्तर : तीतुस 3:5

12. **दूसरे आगमन** के बारे वे इस बात को ठुकरा देते हैं कि मसीह देहिक रूप से पृथ्वी पर लौटेगा। बल्कि उसकी अदृश्य "उपस्थिति" जिसका आरंभ 1914 में हुआ, वह उन घटनाओं को आगे बढ़ा रही है जो आरमगेदोन के युद्ध और सहस्त्राब्दी में पूरी होंगी। वाचटावर सोसाइटी ने अब तक बहुत बार आरमगेदोन के युद्ध की बहुत सी तिथियों को रखा था, परन्तु हर बार भविष्यवाणी के झूठ साबित होने पर बहुत से सदस्यों ने इस आन्दोलन को छोड़ दिया। **उत्तर :** प्रेरितों के काम 1:10-11

13. वे सभी संगठित धर्मों का इनकार करते हैं और सिखाते हैं कि उनके अतिरिक्त और सभी प्रचारक झूठे और ढोंगी हैं। **उत्तर :** झूठे समूह (कल्ट) की परिभाषा देखें

14. वे विवाह करने और बच्चे उत्पन्न करने को नापसंद करते हैं क्योंकि समय बहुत कम है। **उत्तर : उत्पत्ति** 1:28

15. वे किसी भी देश की सरकार को नहीं मानते और वे झंडे को सलाम करने से भी इनकार करते हैं और न ही युद्ध में भाग लेते हैं। **उत्तर :** रोमियों 13:1-7

16. वे जन्मदिन, क्रिसमस, ईस्टर या किसी भी अन्य त्यौहार को गलत मानते हैं और उन्हें नहीं मनाते। **उत्तर :** लूका 2:9-20; मत्ती 2:1-2, 9-12; रोमियों 14:5-6

17. वे लैव्यवस्था 17 को गलत रूप में समझने के कारण रक्त के आदान-प्रदान का इनकार करते हैं। **उत्तर :** इफिसियों 5:1-2 में बाइबल रक्त न देने के बारे में नहीं सिखाती। बल्कि हमें दूसरों के लिए हमारे जीवन का बलिदान करने (जिसमें रक्त भी शामिल है) को कहा गया है।

एक युवा व्यक्ति की कहानी

यहोवा के साक्षी के रूप में मेरा जन्म और पालन-पोषण हुआ और मैं इसी इच्छा के साथ बढ़ा कि मुझे सेवक बनना है, मैं चाहता था कि सब मेरी तरह परमेश्वर से प्रेम करें और जब मैं 12 वर्ष का था तो मेरा बपतिस्मा हुआ।

मैं नहीं जानता कि आप यहोवा के साक्षियों से कितना परिचित हैं, परन्तु वे मानते हैं कि मसीही रेडियो से लेकर मसीही पुस्तकें, और टीवी और सभी डिनोमिनेशंस शैतान के आराधक हैं। आपको उनके अनुवाद (जो कि उनकी शिक्षाओं के अनुसार किया गया है, जैसे कि यूहन्ना 1:1 में "वचन परमेश्वर था" को "वचन ईश्वरीय था" कर दिया गया, और पवित्र आत्मा का भी इनकार किया गया है और उसे "परमेश्वर की सक्रिय शक्ति" के रूप में बदल दिया गया है) को छोड़कर कोई और अनुवाद को पढने की अनुमति नहीं है, और न ही आप उनकी पुस्तकों को छोड़कर कोई और पुस्तक पढ़ सकते हैं।

सोलह वर्ष की उम्र में फुटबॉल खेलने और लूका 9:49-50 के विषय में पूछते हुए अन्य डिनोमिनेशंस के बारे में उनकी धारणाओं को पूछने के कारण मुझे संगति से बाहर कर दिया गया था। मुझसे कहा गया कि मैं तब तक न लौटूं जब तक मैं पश्चाताप न कर लूं और बिना प्रश्न के उनकी धारणाओं को न मान लूं। मैं उस समय 16 साल का था और मुझे जबरदस्ती मेरे माता-पिता के घर से निकाल दिया गया क्योंकि साक्षियों को निर्देश दिया जाता है कि वे आपको

एक मृत व्यक्ति और शैतान के अनुयायी के रूप में देखें, और आपसे कोई संबंध न रखें, यहाँ तक आपका परिवार भी।

यह 23 वर्ष पहले की बात है और हालाँकि मैंने बहुत बार अपने परिवार से सम्पर्क करने का प्रयास किया, परन्तु हर बार एक ही उत्तर मिला, "तब तक हमारा तुम से कोई संबंध नहीं होगा जब तक तुम साक्षियों में लौट नहीं आते, तुम हमारे लिए मर गए हो।

दुर्भाग्यवश जब मैंने साक्षियों को छोड़ा तो मैंने परमेश्वर को भी छोड़ दिया था। मैंने बाइबल को दूर कर दिया और अपने जीवन के अगले 20 वर्ष मैंने गहन शोध और भौतिक विज्ञान के अध्ययन के साथ इसी बात को साबित करते हुए बिताए कि परमेश्वर का कोई अस्तित्व नहीं है।

लगभग एक वर्ष पहले यीशु मसीह के साथ मेरी एक व्यक्तिगत भेंट हुई, जिसने मुझे एक बाइबल खरीदने और नए नियम को पुनः पढने की अगुवाई की, परन्तु इस बार मैंने इसे ऐसे पढ़ा जैसे कि मैंने यीशु या परमेश्वर के बारे में कुछ नहीं सुना है, मैं यह देखने का प्रयास कर रहा था कि यदि कोई व्यक्ति इसे पहली बार पढता है तो वह क्या विश्वास करेगा।

मैं वचन की सामर्थ से इतना भर गया कि मैं कई दिनों तक रोता रहा जब उसने मुझे मेरी सारी गलत शिक्षाओं, गलत धारणाओं और मेरे साथ हुई सब बातों से साफ कर दिया। मैंने अपने जीवन को पुनः समर्पित कर दिया और फिर से बपतिस्मा ले लिया, इस बार सही रूप से, पिता, पुत्र और पवित्र आत्मा के नाम से, यहोवा के साक्षी ऐसा नहीं करते।

III. मोरमोनिज्म

A. पृष्ठभूमि

द चर्च ऑफ़ जीसस क्राइस्ट ऑफ़ द लेटर-डे सेंट्स, आम तौर पर मॉरमॉन चर्च की स्थापना जोसफ स्मिथ, जूनियर (1805-1844), द्वारा की गई जो संयुक्त राज्य के न्यूयॉर्क राज्य का निवासी था। स्मिथ ने दावा किया कि पिता परमेश्वर और यीशु मसीह 1820 में उसके समक्ष प्रकट हुए और कहा कि सारी कलीसियाएं गलत हैं और उनके विश्वास-कथन निंदनीय हैं। 1823 में मोरोनी नाम का स्वर्गदूत उसके समक्ष प्रकट हुआ और उसे सुनहरी प्लेटों के बारे में बताया जो पास की पहाड़ी के नीचे दबी हुई हैं। और यह बताया कि इन प्लेटों पर उन प्राचीन लोगों का नाम लिखा हुआ है जो पूर्व से अमेरिका में आ गए थे। 1827 में स्मिथ ने दावा किया कि मोरोनी ने उसे निर्देश दिए कि वह उन प्लेटों को निकाले और अलौकिक सहायता से उन पर खुदे

हुए "रिफोर्मड इजिप्शियन हाइरोग्लिफिक" का "अनुवाद" करना आरंभ करे। मार्च 1830 को स्मिथ ने अनुवाद के फलस्वरूप "बुक ऑफ़ मॉरमॉन" प्रकाशित की और एक महीने बाद अपनी कलीसिया की स्थापना की।

1844 में जोसफ स्मिथ के एक क्रोधित भीड़ के हाथों मारे डाले जाने के बाद ब्रिघम यंग (1801-1877) इस समूह का अगुवा बना और "सेंट्स" को यूटा में ले गया। वर्तमान मॉरमॉन प्रोफेट गॉर्डन बी. हिन्कले है। आज मॉरमॉन चर्च में लगभग 1 करोड़ सदस्य हैं। मॉरमोन्स मिशनरी कार्य और साहित्य वितरण में सक्रिय रूप से भाग लेते हैं। अंततः धन संपदा में वे रोमन कैथोलिक चर्च के बाद सबसे धनी हैं।

गैर-बाइबलीय शिक्षा का सार

1. परमेश्वर के बारे में मॉरमोन्स अनेक ईश्वरों के एक अनंत प्रवाह में विश्वास करते हैं जो दूसरे ईश्वरों को उत्पन्न करते हैं। "परमेश्वर पिता" ऐसा ही एक ईश्वर है, और वह इस ग्रह के ऊपर ईश्वर है और वह ईश्वर है जिसकी ओर हम देखते हैं। इस प्रकार मोरमोनिज्म बहुईश्वरवादी है, वहीं मसीहियत पूरी तरह से ऐकेश्वरवादी है। वे यह भी मानते हैं कि परमेश्वर पिता एक मनुष्य है और वह सुसमाचार के उन्हीं सिद्धांतों का पालन करते हुए ईश्वर के पद तक पहुंचा है जिनका पालन सभी मॉरमोन्स करते हैं। परमेश्वर पिता के पास वैसा ही शरीर और हड्डियाँ हैं।

2. मॉरमोन्स **त्रिएकता** की बाइबल की शिक्षा का इनकार करते हैं, और यह सिखाते हैं कि पिता, पुत्र और पवित्र आत्मा तीनों अलग-अलग ईश्वर हैं।

3. मनुष्य के बारे में मॉरमोन्स सिखाते हैं कि वह "अविकसित अवस्था" में ईश्वर है और अपने स्वर्गीय पिता के समान ईश्वर का पद प्राप्त कर सकता है। परमेश्वर और मनुष्य एक ही प्रजाति के हैं और परमेश्वर मनुष्य की महिमान्वित अवस्था है। इस वर्तमान संसार में जन्म लेने से पहले सभी मनुष्य स्वर्ग में पिता और माता ईश्वर की आत्मिक संतान थे। आत्मिक क्षेत्र में उनके पूर्व के अस्तित्व का कोई स्मरण नहीं होता। यह पूर्व-अस्तित्व का जीवन परीक्षा का समय था। जो इस परीक्षा के दौरान कम विश्वासयोग्य या हिंसक थे, वे पृथ्वी पर काली चमड़ी के जन्म लेते हैं। और यदि वे मॉरमॉन शिक्षाओं और कुछ क्रियाओं का पालन करते हैं तो वे भी महानता को प्राप्त करेंगे। और जो महिमा को प्राप्त करते हैं वे एक ग्रह में वास करते हैं और आत्मा-संतान को जन्म देते हैं, और यही चक्र चलता रहता है।

4. **यीशु मसीह** के बारे में मॉरमोन्स सिखाते हैं कि वह लूसिफर का आत्मारुपी भाई है क्योंकि उन्हें उसके देहधारण से पहले उसकी अस्तित्वपूर्व अवस्था में समान माता-पिता द्वारा उत्पन्न किया गया था। वे कुंवारी से जन्म का इनकार करते हैं और इसकी अपेक्षा यह सिखाते हैं कि यीशु का मानवीय शरीर परमेश्वर पिता और मरियम के बीच हुए शारीरिक संभोग के कारण से था। वे सिखाते हैं कि पिता एक व्यक्ति है और उसके पास एक भौतिक देह है। उसका ईश्वरत्व अद्वितीय नहीं है क्योंकि यह वही है जो कोई भी व्यक्ति प्राप्त कर सकता है। इस प्रकार यह भी माना जाता है कि मसीह का देहधारण भी अद्वितीय नहीं है क्योंकि सभी ईश्वर, आत्माओं के अपने पूर्वअस्तित्व के बाद ईश्वर बनने से पहले शरीरों को पाने के लिए पृथ्वी पर आए।

5. **उद्धार** के बारे में मॉरमॉन अनुग्रह के द्वारा उद्धार की बाइबलीय शिक्षा का इनकार करते हैं, और बल्कि ये सिखाते हैं कि हम "पश्चाताप, बपतिस्मा, विश्वास, और भले कार्यों" के द्वारा उद्धार प्राप्त कर सकते हैं। मसीह का बलिदानी कार्य सभी लोगों को पुनरुत्थान प्रदान करता है, परन्तु यह एक व्यक्ति के सभी पापों की कीमत नहीं चुका सकता और न ही महिमा प्रदान कर सकता है। जहाँ मसीह का कार्य उद्धार का आरंभ है, वहीं इस प्रक्रिया को पूरा करने के लिए मानवीय कार्य जरुरी हैं। उन कार्यों पर आश्रित रहते हुए लोग स्वर्ग में तीन स्तरों में से एक स्तर को प्राप्त करेंगे, वे तीन स्तर हैं टेलेस्टियल, टेरेस्ट्रियल, या सेलेस्टियल। सबसे ऊंचे स्तर सेलेस्टियल राज्य को प्राप्त करने के लिए मन्दिर विवाह जरुरी है।

6. बाइबल के किंग जेम्स वर्शन के अतिरिक्त मॉरमॉन कलीसिया **अधिकार के मुख्य स्त्रोत** के रूप में इन पवित्र पुस्तकों का इस्तेमाल करते हैं : बुक ऑफ़ मॉरमॉन, डॉक्ट्रिन एंड द कवनेंट्स, द पर्ल ऑफ़ ग्रेट प्राइस। यह भी माना जाता है कि कलीसिया के प्रेसिडेंट सम्पूर्ण कलीसिया की अगुवाई के लिए प्रकाशनों को प्राप्त कर सकते हैं। **उत्तर :** बाइबल के साथ अपनी पवित्र पुस्तकों को जोड़ने के द्वारा मॉरमोन्स ने स्वयं को ऐतिहासिक कलीसिया से बाहर खड़ा कर दिया है, ऐतिहासिक मसीहियत केवल बाइबल को अधिकार के सम्पूर्ण स्त्रोत के रूप में मानती है।

7. मॉरमोन्स दावा करते हैं कि वे ही एकमात्र सच्ची कलीसिया हैं और उनमें सारे स्वर्गीय प्रकाशन पाए जाते हैं। वे इस बात को मानते हैं कि सम्पूर्ण कलीसिया सन् 1830 तक विधर्मी थी, और उस समय जोसफ स्मिथ की अगुवाई में इसकी पुनर्स्थापना हुई।

8. मोरमोनिज्म के संस्थापक, जोसफ स्मिथ के बारे में कहा जाता है कि वह अपने जन्म से पहले ही परमेश्वर के अचूक नबी के रूप में ठहराया गया है।

9. मॉरमोन्स मानते हैं कि मनुष्य का पतन ऊपर की ओर पतन था। यदि आदम ने प्रतिबंधित फल न खाया होता तो उसके कोई संतान नहीं होती। क्योंकि उसने प्रतिबंधित फल खाया इसीलिए मनुष्य अब वंश को आगे बढ़ा सकता है।

10. मॉरमोन्स मृतकों के लिए बपतिस्मा को मानते हैं। एक जीवित मॉरमॉन उस दूसरे के लिए बपतिस्मा ले सकता है जिसकी मृत्यु बिना बपतिस्मा लिए हो चुकी है। वे मन्दिर के एकांत और याजक के निरीक्षण में मृतकों के साथ प्रभु-भोज को भी मानते हैं।

11. मॉरमोन्स अभी भी बहुविवाह को मानते हैं और सेलेस्टियल विवाह को भी सिखाते हैं। ये केवल इस जीवन के लिए ही नहीं बल्कि स्वर्ग के लिए भी माने जाते हैं। बहुत से मॉरमोन्स मानते हैं कि मसीह का विवाह मरियम और मार्था से हुआ था।

12. मॉरमोन्स यथार्थ सहस्त्राब्दी को मानते हैं जिसके दौरान मसीह दो राजधानियों से पृथ्वी पर राज्य करेगा : यरूशलेम और स्वतंत्र मिजौरी।

IV. यूनिफिकेशन चर्च

A. पृष्ठभूमि

यूनिफिकेशन चर्च का संस्थापक और वर्तमान अगुवा सुन म्युंग मून है। मून दावा करता है कि 1936 में जब वह सोलह वर्ष का था तो यीशु मसीह उस पर प्रकट हुआ और मून उस मिशन को पूरा करेगा जो यीशु ने आरंभ किया था।

1946 में मून को उत्तरी कोरिया की पुलिस द्वारा गिरफ्तार किया गया और मून ने दावा किया कि उसके विश्वास के कारण उसे प्रताड़ित किया गया। उसे छोड़ा गया और फिर से बंदीगृह में डाल दिया गया, परन्तु कोरियाई युद्ध के दौरान वह दक्षिण की ओर भागने में सफल रहा। 1954 में उसने दक्षिणी कोरिया में अपनी कलीसिया की स्थापना की, जिसका नाम उसने *होली स्पिरिट एसोसिएशन फॉर द यूनिफिकेशन ऑफ़ वर्ल्ड क्रिश्चियनिटी* रखा (जिसे आम तौर पर यूनिफिकेशन चर्च कहा जाता है)। 1957 में मून ने *डिवाइन प्रिंसिपल* (दैवीय सिद्धांत) नामक

पुस्तक प्रकाशित की जो यूनिफिकेशन धर्मविज्ञान को प्रस्तुत करने वाली मुख्य आधिकारिक पुस्तक है।

1959 में यह समूह संयुक्त राज्य में फ़ैल गया। मून ने 1970 के दशक में सबसे अधिक लोगों को आकर्षित किया, जब उसके आन्दोलन को मीडिया का बहुत अधिक आकर्षण मिला, यह अधिकांश नकारात्मक ही था। अनैतिक भर्ती और धन एकत्रित करने के तरीकों तथा मून की अधिकारवादी शैली के प्रति विवाद उठ खड़े हुए। 1982 में मून पर कर-चोरी के आरोपों के कारण उसे अठारह महिनों की कैद हो गई।

यूनिफिकेशन चर्च में लगभग दस से बीस लाख लोगों के बीच सदस्य हैं, उनमें से लगभग दस से तीस हजार लोग संयुक्त राज्य में रहते हैं। "मूनियों", जैसा कि उन्हें बाहर के लोगों द्वारा संबोधित किया जाता है, की सबसे अधिक संख्या कोरिया और जापान में पाई जाती है। न्यूयॉर्क में इस कलीसिया द्वारा एक धर्मविज्ञानी सेमिनारी चलाई जाती है और उसकी व्यापारिक पकड़ काफी अच्छी है, जाना-पहचाना समाचार पत्र *वाशिंगटन टाइम्स* उसी के द्वारा चलाया जाता है।

B. गैर-बाइबलीय शिक्षाओं का सार

1. **दैवीय प्रकाशन** के बारे में यूनिफिकेशन चर्च सिखाती है कि परमेश्वर ने अपना सत्य मून के समक्ष प्रकट किया है, अर्थात् इस युग के लिए आत्मिक सत्य का परमेश्वर का स्त्रोत। मून का सत्य विशेषकर *डिवाइन प्रिंसिपल* में पाया जाता है जो कि बाइबल का "तीसरा नियम" है; इसे बाइबल से भी अधिक आधिकारिक माना जाता है।

2. **पाप** के बारे में मून सिखाता है कि आदम और हव्वा के लिए परमेश्वर की मूल योजना यह थी कि वे आत्मिक रूप से परिपक्व हो जाएं और फिर पापरहित मानवजाति को जन्म दें। फिर भी, शैतान ने हव्वा को अपने साथ नाजायज लैंगिक संबंध बनाने के लिए फुसलाने के द्वारा इस योजना को बिगाड़ दिया; इस बात ने मनुष्यजाति की आत्मिक भ्रष्टता की ओर अगुवाई की। और जब फिर आदम ने हव्वा के साथ संभोग किया (आत्मिक परिपक्वता पाने से पहले) तो मनुष्यजाति शारीरिक भ्रष्टता की ओर अग्रसर हो गई।

3. इस प्रकार **उद्धार** में आत्मिक और भौतिक छुटकारे दोनों की जरुरत होती है। यीशु मसीह इन दोनों बातों के लिए पृथ्वी पर आया : उसे विवाह करके एक पापरहित जाति को उत्पन्न करना था, जो आत्मिक और भौतिक दोनों रूप से छुटकारा प्राप्त हो। परन्तु, क्योंकि यहूदियों

ने उसे ठुकरा दिया इसलिए यीशु मनुष्य के पूर्ण उद्धार को पूरा नहीं कर पाया और इसलिए क्रूस पर मरने के द्वारा केवल आत्मिक छुटकारे को ही प्रदान कर पाया। इसके लिए अब एक दूसरे मसीहा की आवश्यकता है, अर्थात् "दूसरे आगमन का प्रभु" जो भौतिक उद्धार को प्रदान करे। यूनिफिकेशन चर्च के अधिकांश सदस्य मून को दूसरे आगमन का प्रभु मानते हैं। मून का मिशन एक सिद्ध परिवार उत्पन्न करना है। उसके बारह बच्चों को पापरहित माना जाता है। उसे इसी सिद्धता को उसके अनुयायियों की ओर उनकी आज्ञाकारिता के द्वारा बढ़ाना है, जैसे कि मून द्वारा उनके विवाहों का आयोजन करवाना और उन्हें आशीषित करना।

4. **यीशु मसीह** के बारे में मून यीशु के सच्चे परमेश्वर होने या पिता के समान होने का इनकार करता है, यद्यपि उसने सिद्धता पाई है और उस भाव में "दैवीय" है।

5. बाइबल की **त्रिएकता** की शिक्षा को नकारा जाता है।

6. मसीह का **पुनरुत्थान** देहिक नहीं था, और न ही यह हमारे भौतिक छुटकारे को पूरा करता है। आत्मा के रूप में मसीह को जिलाया गया और उसका पुनरुत्थान हमारी आत्माओं के पुनरुत्थान को पूरा करता है।

7. **मृत्यु के बाद के जीवन** के बारे में मून सिखाता है कि नरक पर शैतान का राज है और वह ऐसा स्थान है जहाँ परमेश्वर को ठुकराने वाले मृतकों की आत्माएं अस्थाई रूप से वास करती हैं। क्योंकि दूसरे आगमन का प्रभु अंत में सब मनुष्यों को छुटकारा देगा इसलिए नरक पूरी तरह से नाश हो जाएगा। अंत में सारे मनुष्य दैवीय आत्माएं बन जाएंगे और परमेश्वर के साथ स्वर्ग में रहेंगे।

V. न्यू ऐज मूवमेंट्स

A. पृष्ठभूमि

न्यू ऐज मूवमेंट्स को "लोगों और संगठनों के एक अव्यवस्थित रूप से जुड़े नेटवर्क जो प्रकाश और सांमजस्य के एक नए युग ('अक्वेरियस के युग') के दर्शन को रखते हैं और जो एक साझे 'दृष्टिकोण' से सहमत होते हैं," के रूप में परिभाषित किया जाता है। यह दृष्टिकोण इस विचार को रखता है कि सब कुछ एक ही है (अद्वैतवाद), और वह सब परमेश्वर है (सर्वेश्वरवाद), और कि लोग उस दैवीय शक्ति के साथ एकात्मकता का अनुभव कर सकते हैं (रहस्यवाद)। न्यू ऐज मूवमेंट बहुत ही विविध और विकेंद्रीकृत है। ऐसा कोई व्यक्ति, लोगों का समूह या संस्था नहीं है

जो इसके बारे में बात करते हों। परन्तु अपने साझे मुख्य दार्शनिक विचारों के कारण नए युग के लोग अपने समान विचारों को फ़ैलाने के लिए भिन्न-भिन्न रूपों में भिन्न-भिन्न स्तरों में सहयोग करते हैं।

न्यू ऐज मूवमेंट अपनी धारणाओं को भिन्न-भिन्न स्त्रोतों से लेता है और प्रायः विभिन्न और विरोधाभासी तत्वों को अपनी धारणाओं में रखता है। नए युग का दर्शनशास्त्र जीवन के कई क्षेत्रों में प्रवेश कर चुका हैं, जैसे स्वास्थ्य, "सम्पूर्ण स्वास्थ्य," मनोविज्ञान, विज्ञान, राजनीति (पूरे संसार की एक सरकार), शिक्षा और व्यापार। इस मूवमेंट की विविधता के कारण नए युग के अनुयायियों की संख्या का पता लगाना असंभव है। नए युग और रहस्यवादी पुस्तकों, समाचार पत्रों और पत्रिकाओं के तीन हजार से भी अधिक प्रकाशक हैं।

B. गैर-बाइबलीय शिक्षाओं का सार

1. नए युग के लोग मानते हैं कि **बाइबल**, विशेषकर यीशु की शिक्षाओं में छुपे हुए और गुप्त भावार्थ हैं जो कुछ ही लोगों द्वारा समझे जाते हैं। वे मानते हैं कि जब बाइबल को सही रूप में समझा जाता है तो यह नए युग के दृष्टिकोण का समर्थन करता है कि सब कुछ एक है, सब कुछ परमेश्वर है और मनुष्य परमेश्वर है।

2. **प्रकाशन** के बारे में वे मानते हैं कि संसार के बहुत से धर्म और महान धार्मिक शिक्षक सब सर्वेश्वरवाद, अद्वैतवाद, और मानवीय दिव्यता के नए युग के सत्यों की पुष्टि करते हैं। प्रकाशन हमारे ब्रह्मांड से बाहर के विभिन्न प्राणियों से भी आ सकता है, जैसे ऊपर के स्वामियों जैसे देहमुक्त मानवों से। ये प्रकाशन विशिष्ट रूप से एक व्यक्ति के "माध्यम" से आते हैं जो जानकारी को प्रकट करने वाली आत्मिक शक्ति से नियंत्रित होता है।

3. नए युग के लोग मानते हैं कि **यीशु मसीह** कई अन्य प्रकाशित या प्रबुद्ध लोगों में से एक है जिन्होंने परमेश्वर के सत्य को मानवजाति पर प्रकट किया है। वे यीशु और मसीह के बीच एक स्पष्ट अंतर को दर्शाते हैं। "यीशु" मानव यीशु को दर्शाता है, वहीँ "मसीह" उस दैवीय अस्तित्व को दर्शाता है जो मानव यीशु के अंदर था। नए युग के कुछ लोग यह भी सिखाते हैं कि यीशु पूर्व में गया और पूर्वी गुरुओं द्वारा उसने प्रकाश को प्राप्त किया। और यह प्रकाश पाकर यीशु बुद्ध और कृष्ण जैसे पवित्र पुरुषों के समान "मार्ग दिखानेवाला" बन गया।

4. **परमेश्वर** के बारे में नए युग के लोग सर्वेश्वरवादी भाव को रखते हैं। अर्थात् परमेश्वर सब कुछ है और सब कुछ परमेश्वर है। परमेश्वर को वैयक्तिक के रूप में नहीं देखा जाता परन्तु उसे विविध रूप से अवैयक्तिक शक्ति, या ब्रह्माण्डीय चेतना या तेज के रूप में देखा जाता है।

5. **मनुष्य** के बारे में अपनी धर्मशिक्षा में नए युग के लोग मानवीय दिव्यता की पुष्टि करते हैं। क्योंकि सब कुछ परमेश्वर है (सर्वेश्वरवाद), और सब कुछ एक है (अद्वैतवाद), यह मानता है कि बाकी सब कुछ की तरह मनुष्य भी इस दैवीय एकता का भाग है। परमेश्वर होने के रूप में मनुष्य के पास असीमित सामर्थ है और वह अपनी ही वास्तविकता की रचना कर सकता है।

6. नए युग की विचारधारा में **उद्धार** अनावश्यक है। क्योंकि नए युग के लोग पाप की धारणा का इनकार करते हैं, इसलिए उससे बचने की भी आवश्यकता नहीं है। वे इस बात को भी मानते हैं कि यीशु ने पापक्षमा के लिए कोई बलिदान नहीं दिया। लोग अपने जीवन में रूकावट पाप के कारण नहीं बल्कि अपनी दिव्यता को पहचान न पाने के कारण अनुभव करते हैं, इसलिए उन्हें उद्धार की नहीं बल्कि प्रकाश की आवश्यकता है। नए युग के लोग विशिष्ट रूप से पुनर्जन्म की शिक्षा की पुष्टि करते हैं जिसके द्वारा एक व्यक्ति अंततः परमेश्वर के साथ पुनः मिल जाता है।

VI. "केवल यीशु" कलीसियाएं ("जीसस ओनली" चर्चेस)

A. पृष्ठभूमि

"केवल यीशु" कलीसियाओं को ऐसा इसलिए कहा जाता है क्योंकि वे बपतिस्मा की त्रिएकता की विधि (अर्थात् पिता, पुत्र और पवित्र आत्मा के नाम में) को स्वीकार नहीं करते, और केवल यीशु के नाम में बपतिस्मा देते हैं। उन्हें "एकत्व" (वननैस) कलीसियाएं भी कहा जाता है क्योंकि वे केवल यही विश्वास नहीं करते कि पिता, पुत्र और पवित्र आत्मा का तत्व एक ही है (जो कि सही है) परन्तु यह भी मानते हैं कि वे व्यक्तित्व में भी एक हैं (जो कि सही नहीं है)। इस प्रकार, यीशु पिता है, यीशु आत्मा है, आत्मा पिता है, इत्यादि। इस शिक्षा को "मोडलिज्म" के रूप में भी

जाना जाता है क्योंकि एक परमेश्वर, जिसके बारे में वे कहते हैं कि एक व्यक्तित्व है, स्वयं को क्रमशः तीन भिन्न "तरीकों" में प्रकट करता है।

ये कलीसियाएं 1900 के आरंभ में असेम्बलीस ऑफ़ गॉड से निकलीं। 1916 में असेम्बलीस ऑफ़ गॉड ने एक सिद्धांत को अपनाया जिसने स्पष्ट रूप से त्रिएकता-संबंधी विश्वास दर्शाया, और एकत्व (वननैस) के सिद्धांत के मानने वालों को बाहर कर दिया, जिन्होंने फिर अपने संगठनों और सम्प्रदायों का गठन किया। हालाँकि नब्बे भिन्न प्रकार के एकत्व (वननैस) के सम्प्रदाय हैं, फिर भी द यूनाइटेड पेंटेकोस्टल चर्च इंटरनेशनल (UPCI) सबसे बड़ा है, जिसमें विश्वभर में 10 लाख से अधिक सदस्य हैं।

B. गैर-बाइबलीय शिक्षाओं का सार

1. **मसीह** के बारे में एकत्व (वननैस) को मानने वाले विश्वास करते हैं कि यीशु पूर्ण परमेश्वर है। परन्तु वे दावा करते हैं कि यीशु ही पिता है और पवित्र आत्मा है, और इस बात का तर्क देते हैं कि परमेश्वर का "सब कुछ" देहधारित हो गया। जैसा कि बताया गया है, यह प्राचीन झूठी शिक्षा मोडलिज्म को पुनः स्थापित करने जैसा है।

2. **यीशु के पुत्रत्व** के बारे में वे मानते हैं कि यीशु केवल अपने देहधारण में ही पुत्र है (चाहे वह "मनुष्य के पुत्र" के रूप में हो या "परमेश्वर के पुत्र" के)। उनके अनुसार शब्द "पुत्र" मसीह की मानवीय प्रकृति दर्शाता है। अतः एकत्व (वननैस) के मानने वाले मसीह के अनंत, अस्तित्वपूर्व के पुत्रत्व का इनकार करते हैं। देहधारण से पहले परमेश्वर को "वचन" कहा जा सकता था - जो कि पिता भी है - परन्तु पुत्र नहीं। देहधारण के समय परमेश्वर ने उद्धार के उद्देश्य के लिए पुत्र की भूमिका ले ली, परन्तु इस भूमिका का एक निश्चित अंत तो होगा (अर्थात् अंत के समय पर)।

3. एकत्व (वननैस) का धर्मविज्ञान **परमेश्वरत्व में व्यक्तिगत भिन्नताओं** को तर्करहित और वचन से बाहर का बताता है। यीशु, पिता और पवित्र आत्मा सब एक हैं और एक ही व्यक्तित्व हैं। बाइबल के वे पद जो यीशु और पिता और पवित्र आत्मा के बीच भिन्नता को दर्शाते हैं वे वास्तव में केवल देहधारित यीशु की स्वर्गीय और मानवीय प्रकृति को ही प्रकट करते हैं। **उत्तर :** 1 यूहन्ना 4:14; यूहन्ना 14:16-17

4. **उद्धार** के बारे में एकत्व (वननैस) के लेखक इस बात की पुष्टि करने में ऐतिहासिक मसीहियत से सहमति दर्शाते हैं कि उद्धार पाने के लिए मनुष्य को "नया जन्म" पाना जरुरी है। परन्तु केवल विश्वास से धर्मी ठहराए जाने की बाइबल की शिक्षा के विरुद्ध, एकत्व (वननैस) का धर्मविज्ञान दावा करता है कि नया जन्म विश्वास, पश्चाताप, पानी के बपतिस्मा, और पवित्र आत्मा से बपतिस्मा के द्वारा पाया जाता है। **उत्तर :** यूहन्ना 1:12; 3:15-16

5. **पानी का बपतिस्मा** जो उद्धार के लिए अत्यावश्यक है वह केवल डुबकी के द्वारा और केवल यीशु के नाम में ही होना चाहिए। **उत्तर :** क्रूस पर लटका हुआ डाकू : लूका 23:42-43

6. उसी प्रकार, **पवित्र आत्मा से बपतिस्मा** उद्धार के लिए आवश्यक है और यह अन्य भाषा में बात करने के "आरंभिक प्रमाण" के बिना प्राप्त नहीं होता। **उत्तर :** इफिसियों 2:8-9; 1 कुरिन्थियों 12:30

VII. सेवंथ डे एडवेंटिस्टस

A. पृष्ठभूमि

दशकों से यह विवाद चलता आ रहा है कि क्या यह धार्मिक समूह झूठी शिक्षा का समूह है या नहीं। इस विषय पर पकड़ रखे वालों ने दोनों पक्ष लिए हैं। कोई भी यह नहीं कहता कि सेवंथ डे एडवेंटिस्टस उस हद तक "झूठा समूह" हैं जिस हद तक मॉरमोन्स या यहोवा के साक्षी हैं। फिर भी, इस समूह के इतिहास और आज की धर्मशिक्षा में यह कहा जा सकता है कि उनमें झूठे समूह होने की विशेषताएँ अवश्य पाई जाती हैं।

कई रूपों में संयुक्त राज्य के एक लाइसेंसशुदा बैपटिस्ट सेवक को सेवंथ डे एडवेंटिज्म का अगुवा कहा जा सकता है, यद्यपि वह स्वयं इस आन्दोलन से जुड़ा हुआ नहीं था। उसने मसीह के द्वितीय आगमन की तिथि निर्धारित की थी जिसने मसीहियों की उत्सुकता को बढ़ा दिया और 1830 के दशक और 1840 के दशक के आरंभ में इस भविष्यवाणी के फैलने में योगदान दिया। इसी से "एडवेंटिस्टस" नाम भी आया।

जब 22 अक्टूबर 1844 को कुछ नहीं हुआ तो वह समय आया जिसे "एक बड़ी निराशा" का समय कहा गाय और दूसरे लोग समाधान निकालने लगे। एक समाधान जो अगले दिन दर्शन में

आया वह यह था कि मसीह उस दिन पृथ्वी पर आने वाला नहीं था बल्कि उसने मृत्यु को प्राप्त हुए विश्वासियों के "पापों को मिटाने" के लिए अति पवित्र स्थान में प्रवेश किया। बाद में इसे और विकसित किया और अंत में यह **"जांच-संबंधी न्याय"** (इन्वेस्टीगेटिव जजमेंट) बन गया जिसने इसे झूठी शिक्षा का चरित्र प्रदान किया।

दर्शन देखने वाले एलेन जी. व्हाइट सेवंथ डे एडवेंटिस्टस की रचना के पीछे एक मुख्य व्यक्ति प्रतीत होती है। उनको मिलरवादियों और एडवेंटवादियों को एक संयुक्त डिनोमिनेशन में लाने का श्रेय दिया जाता है। बड़ी निराशा के दो महिनों बाद उस सत्रह वर्ष की लड़की ने पहला दर्शन देखा। उसने एडवेंटवादियों को स्वर्ग की राह पर देखा और जिन्होंने एडवेंटवादियों के सत्य पर संदेह किया उन्हें अस्वीकार कर दिया गया। दो महीने बाद उसका अगला दर्शन पहले दर्शन का अगला भाग था जिसमें देखा गया कि परमेश्वर ने 22 अक्टूबर को पापियों के लिए उद्धार का द्वार बंद कर दिया। उसके अगले दर्शन ने सातवें दिन सब्त की पुष्टि की जिसको जोसफ बेट्स बढ़ावा दे रहा था। अगले कुछ वर्षों तक उसे और उसके कुछ विश्वासियों को "सब्तवादी और बंद द्वार" एडवेंटवादी कहा गया।

यह कई स्वनिर्मित भविष्यवक्ताओं का समय था जिनमें व्हाइट उन लोगों को दैवीय पुष्टि प्रदान करने के द्वारा ऊंचाई पर उठी जिनको अपने ओहदे मजबूत करने थे। वह मिनटों से लेकर घंटों तक फर्श पर बेहोशी अवस्था में पड़ी रहती थी। जब दर्शन समाप्त हो जाता था तो वह शक्तिहीन होकर लंगडाती थी और उसे कुर्सी पर बैठना पड़ता था। एक बार उसका पति जेम्स व्हाइट, एक सामान्य एडवेंटिस्टवादी प्रचारक, उसका समर्थन करने से पीछे हट गया। उसकी पत्नी के लिए आम लोगों का समर्थन उसकी अपेक्षा से कहीं अधिक था, इसलिए उसे अपने ओहदे से हटने और बाद में अपनी पत्नी के दर्शन की उपेक्षा करने के कारण माफ़ी मांगने के लिए कहा गया। उस समय से श्रीमती व्हाइट को अपने दर्शनीय संदेशों को प्रस्तुत करने का पूरा अधिकार मिल गया।

B. गैर-बाइबलीय शिक्षाओं का सार

1. जांच-संबंधी न्याय (इन्वेस्टीगेटिव जजमेंट)- बहुत से सेवंथ डे एडवेंटिस्टस आपको बता नहीं सकते कि यह शिक्षा क्या है और उनके बहुत से पास्टर इसे सिखाते भी नहीं। फिर भी, इस डिनोमिनेशन के विश्वास कथन का एक बड़ा हिस्सा इस शिक्षा के बारे में है। इस कथन के 1980 के संशोधन का सूत्र तेईस पुष्टि करता है कि "2300 दिनों के भविष्यवाणिय समय के अंत में, अर्थात् 1844 में" यीशु ने "अपनी बलिदानी सेवा के दूसरे और अंतिम चरण में प्रवेश

किया" और यह "जांच-संबंधी न्याय का कार्य है जो सारे पापों के सम्पूर्ण रूप से दूर होने का भाग है. . ." और यह आज तक जारी है। जैसे कि एलन व्हाइट ने स्पष्ट किया, प्रकाशितवाक्य 20:12 में कही गई "पुस्तकों" में दर्शाए गए उनके अच्छे और बुरे कार्यों के अनुसार नाम पुकारे जाते हैं तो "उनकी गहराई से जांच की जाती है।" न्याय के इस समय के दौरान "नामों को स्वीकार किया जाता है, और नामों को अस्वीकार किया जाता है।" अस्वीकार किए गए वे हैं "जिनके पाप लेखे की पुस्तक में बने रहते है, अपश्चातापी और क्षमा न किए गए।" स्वीकार किए गए वे हैं, "जिन्होंने अपने पापों से सच्चा पश्चाताप किया है और विश्वास के द्वारा मसीह के लहू को पाप के बलिदान के रूप में घोषित किया है . . . और उनके चरित्र परमेश्वर की व्यवस्था के सामंजस्य में पाए जाते हैं।" केवल उनके पाप ही "साफ़ किए जाएँगे और वे अनंत जीवन के लिए योग्य ठहराए जाएंगे।"

उत्तर : इस कल्पना के समर्थन में पवित्रशास्त्र का कोई पद नहीं है।

2. यीशु मसीह की मृत्यु और क्रूस पर बहाया गया लहू पापों की क्षमा के लिए पर्याप्त था, परन्तु **पापों को हटाने** के लिए नहीं। वे स्पष्ट करते हैं : "पापों को वास्तविक रूप में हटाया जाना उस समय नहीं हो पाया जब पापों की क्षमा प्राप्त हुई थी, क्योंकि उसके बाद के कार्य और व्यवहार अंतिम निर्णय को प्रभावित कर सकते हैं। इसकी अपेक्षा, पाप तब तक लेखे में रहता है जब तक जीवन पूर्ण नहीं हो जाता- वास्तव में पवित्रशास्त्र बताता है कि यह न्याय के समय तक रहता है।" पूर्ण जीवन के नाम के जांच-संबंधी न्याय के सामने प्रस्तुत होने और स्वीकार किए जाने के बाद भी पाप पूरी तरह से हटाया नहीं जाता है। वह तब तक नहीं होता जब तक यीशु पापों को "शैतान पर नहीं रख देता जिसे न्याय के होने के समय दंड को सहना अवश्य है" क्योंकि वह "पाप का मूल और भड़कानेवाला है, अतः शैतान उन सब पापों को सहेगा जो उसने परमेश्वर के लोगों से करवाए थे और एक हजार वर्षों तक पृथ्वी पर फेंक दिया जाएगा।"

उत्तर : यह धर्मशिक्षा कलवरी क्रूस पर यीशु मसीह की मृत्यु और बहाए गए लहू के पूरे किए गए कार्य का इनकार करती है। अन्य किन्हीं बातों से अधिक सेवंथ डे एडवेंटिस्टस की यह शिक्षा उन्हें मुख्य धारा के इवैंजेलिकल लोगों से अलग करती है।

3. **सातवें दिन आराधना करना** एक महत्वपूर्ण पहलू बन गया जब *द सेवंथ डे सबथ, ए परपेचुअल साइन* नामक पुस्तक लिखी गई। बाद में इसमें ये चेतावनियाँ भी शामिल की गईं

कि जो अपने मस्तक पर उस पशु और उसकी मूर्ति की आराधना के लिए एक छाप को ग्रहण करेंगे वे ऐसे लोग होंगे जो रविवार की आराधना में पोप (पशु) का अनुसरण करेंगे। उसने कहा कि रोमन कैथोलिक चर्च के द्वारा सब्त रविवार को कर दिया गया था। वे तर्क देते हैं कि दस आज्ञाओं का मूल सिद्धांत अपरिवर्तित हैं और वे परिवर्तन न होने वाला है।

उत्तर : पुनरुत्थान के बाद कलीसिया सप्ताह के पहले दिन आराधना के लिए एकत्रित होने लगीं। यूहन्ना 20:1; प्रेरितों के काम 20:7; 1 कुरिन्थियों 16:2; प्रकाशितवाक्य 1:10। इब्रानियों 4:9 दर्शाता है कि सब्त वह विश्राम है जब एक व्यक्ति नया जन्म लेता है और उद्धार पाने के लिए अपने कार्यों पर निर्भर रहना बंद कर देता है।

4. **"आत्मा के सोने"** की धारणा एडवेंटिस्टवादियों की धर्मशिक्षा का अन्य पहलू है जिसे इस आन्दोलन के बाहर के बाइबल विद्वानों द्वारा प्रायः चुनौती दी जाती हैं। वे सिखाते हैं कि आत्मा और देह अवचेतना की अवस्था में हैं : कार्लिले हेनेस लिखता है, "मृत्यु वास्तव में एक नींद की अवस्था है, जो गहरी नींद है, जो अचेतन है और पुनरुत्थान तक लगातार रहती है।" वह तर्क देता है कि "बाइबल की भाषा इसे स्पष्ट करती है कि यह पूरा मनुष्य है जो सोता है, न केवल एक भाग। इस बारे में कुछ नहीं बताया गया है कि मनुष्य केवल अपनी देह के साथ सोता है, और अपनी आत्मा में सचेत और जगता रहता है।"

उत्तर : यूहन्ना 11:11-14; 2 कुरिन्थियों 5:6-8; फिलिप्पियों 1:2-14

5. **अनंत दंड-** वे बाइबल की इस शिक्षा को ठुकराते हैं कि गैरविश्वासी नरक में सचेत और अनंत दंड को सहेंगे। 1957 में पहली बार प्रकाशित *क्वेश्चन ऑन डॉक्ट्रिन* में वे **अपने तर्क के पांच कारण बताते हैं।**

(1) क्योंकि अनंत जीवन परमेश्वर का दान है (रोमियों 6:23), इसलिए दुष्ट लोग इसे प्राप्त नहीं कर सकते। वे "जीवन को नहीं देखेंगे" (यूहन्ना 3:36); "किसी भी हत्यारे में अनंत जीवन वास नहीं करता।" (1 यूहन्ना 3:15)

उत्तर : यह सही है। उनमें अनंत जीवन नहीं है, उनके पास अनंत मृत्यु है, परमेश्वर से अनंत अलगाव। 2 थिस्सलुनिकियों 1:8-9

(2) क्योंकि अनंत सताव पाप, दुःख और श्राप को अमर और स्थिर कर देगा इसलिए हम मानते हैं कि यह दैवीय प्रकाशन का विरोध करेगा जो ऐसे समय की प्रतीक्षा करता है जब ये सब नहीं रहेगा (प्रकाशितवाक्य 21:4)

उत्तर: जिस पद का वे उल्लेख करते हैं वह "नए स्वर्ग और नई पृथ्वी" के विषय में है। बिलकुल, पापियों का उनमें कोई भाग नहीं होगा। पद 8 कहता है कि उनका स्थान "उस झील में मिलेगा जो आग और गन्धक से जलती रहती है, यह दूसरी मृत्यु है।" जो परमेश्वर से दूर हमेशा का जीवन होगा (प्रकाशितवाक्य 20:10)।

(3) क्योंकि यह हमें सम्पूर्ण अस्तित्व में एक धब्बे जैसा प्रदान करना लगता है, और यह इस बात को भी दर्शाता है कि परमेश्वर के द्वारा इसे कभी दूर करना असंभव होगा।

उत्तर : मूर्खतापूर्ण! "परमेश्वर के लिए कुछ भी असंभव नहीं है।" वे परमेश्वर की योजना पर अपने तर्कों को रख रहे हैं और उसका विरोध कर रहे हैं।

(4) क्योंकि यह हमारी विचारधारा में परमेश्वर के चरित्र में दर्शाए गए प्रेम के चरित्र से नीचे गिरना होगा और उस क्रोध के भाव को ऊँचा उठाना होगा जो कभी शांत नहीं हो सकता।

उत्तर : परमेश्वर के प्रेम की चौड़ाई, लम्बाई, ऊंचाई और गहराई सब "विश्वास करने वालों" के लिए अभिव्यक्त और उपलब्ध है (यूहन्ना 3:16)। परन्तु जो यीशु को ठुकरा देते हैं और विश्वास नहीं करते, वे "जीवन को नहीं देखेंगे, बल्कि परमेश्वर का क्रोध उस पर बना रहता है (निरंतर प्रक्रिया)।" यह अनंत मृत्यु है, परमेश्वर से अलगाव।

(5) क्योंकि पवित्रशास्त्र सिखाता है कि मसीह का बलिदानी कार्य "पाप को दूर करना" है (इब्रानियों 9:26), पहले लोगों से और फिर ब्रह्मांड से। मसीह के बलिदानी और पाप को दूर करने के कार्य की पूर्णता न केवल छुड़ाए गए लोगों में दिखाई देगी बल्कि पुनर्स्थापित स्वर्ग और पृथ्वी में भी (इफिसियों 1:14)।

उत्तर : हाँ उनका कथन सही है। परन्तु यह इस बात को नहीं नकारती कि "आग की झील" जहाँ सारे अविश्वासी पापी, शैतान, पशु, और झूठे भविष्यवक्ता होंगे "वे रात दिन युगानुयुग पीड़ा में तड़पते रहेंगे।" प्रकाशितवाक्य 20:10

VIII. माइंड साइंसेज (मन विज्ञान)

A. पृष्ठभूमि

"माइंड साइंसेज" अनेक उन भिन्न झूठे समूहों का मिश्रण है जो परमेश्वर और वास्तविकता की प्रकृति के साझे दार्शनिक परिदृश्य को रखते हैं। उन्हें माइंड साइंसेज इसलिए कहा जाता है क्योंकि वे परमेश्वर को "दैवीय मन" के रूप में कहते हैं जो कि एक अवैयक्तिक सिद्धांत है। माइंड साइंस के समूह सिखाते हैं कि दैवीय मन सम्पूर्ण वास्तविकता की रचना करता है; भौतिक संसार का या तो अस्तित्व है ही नहीं या फिर यह दैवीय मन का एक पहलू है। अतः माइंड साइंस की शिक्षा सर्वेश्वरवादी है, परमेश्वर सब कुछ में है।

हम केवल तीन सबसे बड़े समूहों पर चर्चा करेंगे।

क्रिस्चियन साइंस (मसीही विज्ञान) की स्थापना मैरी बेकर के द्वारा 1879 में की गई थी। उसके दृष्टिकोण *साइंस एंड हेल्थ विद की टू स्क्रिपचर्स* में प्रस्तुत किए गए। "आध्यात्मिक चंगाई" उसकी शिक्षा का एक महत्वपूर्ण भाग थी और यह क्रिस्चियन साइंस की धारणा का एक महत्वपूर्ण तत्व है। वर्तमान में 25 लाख मसीही विज्ञानी हैं।

रिलीजियस साइंस (धार्मिक विज्ञान), जिसे मन का विज्ञान भी कहा जाता है, की स्थापना अर्नेस्ट होम्स के द्वारा 1927 में की गई। उसकी मुख्य पुस्तक है, *साइंस ऑफ़ माइंड*। उनमें लगभग 60 लाख सदस्य हैं और यह माइंड साइंस का सबसे तेजी से बढ़ता हुआ झूठा समूह है।

यूनिटी स्कूल ऑफ़ क्रिश्चियनिटी की स्थापना चार्ल्स और मिर्टल द्वारा फिलमोर में 1800 के अंत में की गई थी। इनमें विश्वभर की 300 से अधिक कलीसियाओं में लगभग 11 लाख सदस्य पाए जाते हैं।

B. गैर-बाइबलीय शिक्षाओं का सार

1. **प्रकाशन** के बारे में :

   यूनिटी स्कूल ऑफ़ क्रिश्चियनिटी और रिलीजियस साइंस सिखाते हैं कि सत्य कई धर्मों की "बाइबलों" में पाया जाता है, यद्यपि यह स्पष्टता और पूर्ण रूप से उनके अपने समूहों में

सिखाया जाता है। इन "बाइबलों" जिसमें मसीही बाइबल भी शामिल है, की व्याख्या अभौतिक रूप से की जानी चाहिए। अर्थात् ऐसा कुछ नहीं है जिसका अस्तित्व हो।

क्रिस्चियन साइंस (मसीही विज्ञान) अलग है और दावा करती है कि "सच्ची मसीहियत" को केवल एडी की पुस्तक *साइंस और हेल्थ* के द्वारा ही समझा जा सकता है।

2. **परमेश्वर** को दैवीय मन के रूप में देखा जाता है : अवैयक्तिक परन्तु फिर भी व्यक्तिगत। परमेश्वर, यह त्रिरूपी सिद्धांत या मन है : जीवन, सत्य, और प्रेम। परमेश्वर "सब में सब कुछ है।" सब कुछ एकीकृत है, जो "सब एक है" में व्यक्त किया जाता है।

3. क्रिस्चियन साइंस (मसीही विज्ञान) **भौतिक संसार** के अस्तित्व का इनकार करता है; यह एक भ्रम है, इसका वास्तव में अस्तित्व नहीं है। रिलीजियस साइंस और यूनिटी स्कूल ऑफ़ क्रिश्चियनिटी भौतिकता के अस्तित्व की पुष्टि करता है, परन्तु कहता है कि भौतिक ब्रह्मांड परमेश्वर की देह है; वह सबमें है परन्तु सबसे बड़ा है।

4. **यीशु** केवल एक व्यक्ति था, देहिक रूप में एक दैवीय विचार। यीशु परमेश्वर का पुत्र था परन्तु परमेश्वर पुत्र नहीं (जैसा कि त्रिएकतावादी पुष्टि करते हैं)। यीशु मसीह नहीं था; बल्कि "मसीह" तो "परमेश्वर का दैवीय प्रकटीकरण है, जो देहिक त्रुटियों को नाश करने के लिए देह में आया।" रिलीजियस साइंस विशेष रूप से दावा करती है कि यीशु, मसीह बना जैसा सब लोग बन सकते हैं। उनके अनुसार मसीह हर व्यक्ति का उच्चतम स्वयं है। माइंड साइंस के सभी समूह सिखाते हैं कि यीशु उद्धार की ओर हमें मार्ग दिखाने वाला है, परन्तु वह हमें उद्धार नहीं दे सकता। यीशु हमारा तत्वज्ञानी है जिसने दैवीय विज्ञान के सत्य सिखाए। उसकी शिक्षाओं को तात्विक रूप में समझा जाना चाहिए।

5. **मनुष्यजाति** सिद्ध है, पापरहित, (क्योंकि पाप अवास्तविक है) और अनंत है। वे परमेश्वर के भाग हैं। रिलीजियस साइंस, यूनिटी स्कूल ऑफ़ क्रिश्चियनिटी सिखाते हैं कि मनुष्य की देह, शेष सब भौतिक चीजों के समान, दैवीय मन का प्रकटीकरण है।

6. **मसीह की मृत्यु और पुनरुत्थान** के बारे में, क्योंकि मृत्यु एक भ्रम है, इसलिए मसीह क्रूस पर नहीं मरा। फलस्वरूप देहिक पुनरुत्थान अनावश्यक था और है।

7. **पाप,** देह, बुराई, बीमारी, मृत्यु अवास्तविक और भ्रम हैं; वे विचार के विनाशक रूप हैं।

8. मनुष्य के पास पहले से अनंत **उद्धार** है; कोई अंतिम न्याय नहीं है। "उद्धार" उस गलती से बचना है जो पाप, बीमारी, और मृत्यु उत्पन्न करते हैं। लोगों को अपनी अज्ञानता पर विजय पानी है और महसूस करना है कि वे परमेश्वर के साथ एक हैं। इसके अतिरिक्त, क्रिस्चियन साइंस दावा करता है कि मसीही विज्ञान की क्रिया के बिना स्वर्ग के राज्य में जाने का कोई मार्ग नहीं है।

9. यूनाइटेड स्कूल ऑफ़ क्रिश्चियनिटी की शिक्षा की सबसे अलग बात पुनः अवतार लेना है। देहिक मृत्यु के बाद आत्मा इसके अगले अवतार तक सोती रहती है। अगले पुनर्जन्म अन्य मनुष्य का रूप लेते हैं। हर अवतार को इसके "कर्म" करने हैं और अस्तित्व के अगले चरण में प्रवेश करना है, जिसका अंतिम परिणाम अनंत जीवन होगा।

IX. पुस्तक विवरणिका

Another Gospel, Ruth A Tucker, Academie Books, Zondervan Publishing House, Grand Rapids Michigan, 1989

Truth And Error, Comparative Charts on Cults and Christianity, Edited and with introductions by Alan W. Gomes, Zondervan Publishing House, Grand Rapids Michigan, 1998